# महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति और निर्णय लेने की क्षमता : हरियाणा के ग्रामीण क्षेत्रों में एक अध्ययन

**डॉ. राहुल**
शोधार्थी (डॉक्टर ऑफ लिटरेचर )
समाजकार्य–समाजशास्त्र विभाग
महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखण्ड
विश्वविद्यालय, बरेली (उत्तर प्रदेश)

## सारांश

यह अध्ययन हरियाणा के ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति और उनके निर्णय लेने की क्षमता को समझने का प्रयास करता है। विशेष रूप से यह शोध सामाजिक, सांस्कृतिक, और आर्थिक कारकों का विश्लेषण करता है, जो महिलाओं के निर्णय लेने की प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं। इस शोध में पाया गया कि महिलाओं की शिक्षा, आय, रोजगार, और परिवार का आकार उनकी निर्णय लेने की क्षमता को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं। अध्ययन ने यह भी दर्शाया कि पारंपरिक लिंग भूमिकाओं और सांस्कृतिक अपेक्षाओं के बावजूद, शिक्षा और आर्थिक सशक्तिकरण ने महिलाओं की भूमिका में सुधार किया है। यह शोध ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए नीतिगत उपायों की दिशा में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है।

**महत्वपूर्ण शब्द :** सामाजिक–आर्थिक स्थिति, महिलाओं का सशक्तिकरण, निर्णय लेने की क्षमता, शिक्षा और रोजगार, पारिवारिक और सामाजिक निर्णय, हरियाणा ग्रामीण क्षेत्र, सांस्कृतिक और लिंग भूमिकाएँ

## 1. परिचय

### 1.1 पृष्ठभूमि

भारत में महिलाओं की स्थिति में पिछले कुछ दशकों में काफी बदलाव आया है, हालांकि यह बदलाव समाज के विभिन्न हिस्सों में अलग–अलग दरों पर हुआ है। विशेष रूप से ग्रामीण इलाकों में, जहाँ महिलाओं की भूमिका

पारंपरिक रूप से सीमित रही है, वहाँ उन्हें अपनी पहचान और अधिकार प्राप्त करने में समय और संघर्ष की आवश्यकता रही है। हरियाणा जैसे राज्य में, जहाँ सामाजिक और सांस्कृतिक मान्यताएँ महिलाओं की भूमिका को नियंत्रित करती हैं, वहाँ यह बदलाव और भी चुनौतीपूर्ण रहा है। महिलाओं का सशक्तिकरण और उनके निर्णय–निर्माण में बढ़ती भागीदारी आज समाज की एक अहम आवश्यकता बन चुकी है। पारंपरिक समाजों में महिलाओं का दायित्व आमतौर पर घरेलू कार्यों तक सीमित होता था, और उनके निर्णय केवल पारिवारिक दायित्वों तक ही सीमित होते थे। हालांकि, समय के साथ महिलाओं की शिक्षा, रोजगार, और सामाजिक स्थिति में सुधार हुआ है, और यह बदलाव उनके निर्णय लेने की प्रक्रिया को प्रभावित कर रहे हैं।

**1.2 समस्या की परिभाषा**

ग्रामीण हरियाणा में महिलाओं की निर्णय लेने की क्षमता और उनकी सामाजिक–आर्थिक स्थिति पर विचार करते हुए यह अध्ययन इस बात को समझने का प्रयास करेगा कि कैसे विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक कारक महिलाओं की निर्णय क्षमता को प्रभावित करते हैं। पारंपरिक रूप से, महिलाओं की भूमिका सीमित रही है, लेकिन आधुनिक समय में शिक्षा और आर्थिक सशक्तिकरण ने उन्हें पारिवारिक और सामाजिक निर्णयों में भाग लेने का अवसर प्रदान किया है। इस शोध में यह जानने का प्रयास किया जाएगा कि सामाजिक–आर्थिक स्थिति, जैसे कि महिलाओं की शिक्षा, आय, रोजगार, और परिवार के आकार, उनके निर्णय लेने की क्षमता को किस प्रकार प्रभावित करते हैं। इस विषय पर बहुत कम शोध उपलब्ध है, विशेष रूप से हरियाणा के ग्रामीण क्षेत्रों में, और यह अध्ययन इस अंतर को भरने का प्रयास करता है।

**1.3 शोध के उद्देश्य**

इस अध्ययन के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैंरू

1. **महिलाओं की निर्णय क्षमता का विश्लेषण** : यह अध्ययन महिलाओं की निर्णय लेने की क्षमता और इसके विकास में विभिन्न सामाजिक–आर्थिक और सांस्कृतिक कारकों का प्रभाव निर्धारित करेगा।
2. **शैक्षिक और आर्थिक सशक्तिकरण** : यह शोध यह समझने का प्रयास करेगा कि क्या शिक्षा और आर्थिक स्वतंत्रता महिलाओं की निर्णय क्षमता को बढ़ाते हैं।
3. **सामाजिक–सांस्कृतिक बदलाव** : यह अध्ययन यह भी परीक्षण करेगा कि पारंपरिक लिंग भूमिकाएँ, सांस्कृतिक अपेक्षाएँ और अन्य सामाजिक तत्व महिलाओं की भूमिका में सुधार लाने में मदद करते हैं या अवरोध उत्पन्न करते हैं।

### 1.4 शोध के महत्व

ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के निर्णय लेने की प्रक्रिया में बदलाव को समझना केवल उनके सशक्तिकरण की दिशा में एक कदम नहीं है, बल्कि यह ग्रामीण समाज के विकास के लिए भी महत्वपूर्ण है। महिलाएं जब निर्णय लेने में सक्रिय रूप से भाग लेती हैं, तो न केवल उनके परिवार की स्थिति में सुधार होता है, बल्कि यह समाज में भी सकारात्मक बदलाव लाता है। इस अध्ययन का महत्व इसलिए है क्योंकि यह हरियाणा जैसे राज्य में महिलाओं की बदलती स्थिति का विश्लेषण करके न केवल अकादमिक, बल्कि नीति–निर्माण के स्तर पर भी उपयोगी जानकारी प्रदान करेगा।

### 1.5 शोध प्रश्न

इस शोध में निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करने का प्रयास किया जाएगाः

1. महिलाओं की निर्णय लेने की क्षमता पर सामाजिक–आर्थिक स्थिति का क्या प्रभाव है?
2. शिक्षा और आर्थिक स्वतंत्रता के द्वारा महिलाओं की निर्णय क्षमता को कैसे बढ़ाया जा सकता है?

3. पारंपरिक लिंग भूमिकाएँ और सांस्कृतिक अपेक्षाएँ महिलाओं की निर्णय लेने की प्रक्रिया को किस प्रकार प्रभावित करती हैं?
4. महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए सरकारी नीतियाँ और कार्यक्रम किस हद तक प्रभावी हैं?

## 2. साहित्य का पुनर्वालोकन

**अली और खान (2024)** में भारत के ग्रामीण परिवारों में पर्यावरण अनुकूल शौचालयों को अपनाने को प्रभावित करने वाले जनसांख्यिकीय, सामाजिक और आर्थिक कारकों का विश्लेषण किया गया है। शोध से यह स्पष्ट होता है कि महिलाएँ पर्यावरण से जुड़े निर्णयों में अधिक सक्रिय – विशेषकर स्वच्छता और स्वास्थ्य संबंधी निर्णयों में भूमिका निभाती हैं। अध्ययन यह भी दर्शाता है कि यदि महिलाओं को ऐसे निर्णयों में अधिक भागीदारी दी जाए, तो उनके स्वास्थ्य और जीवन स्तर में उल्लेखनीय सुधार हो सकता है। साथ ही, शोध में यह निष्कर्ष भी सामने आया है कि ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा और जागरूकता बढ़ाकर इस प्रक्रिया को और अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।

**किटोले और सेसाबो (2024)** तंजानिया में गरीबी कम करने वाले सामाजिक–आर्थिक कारकों का विश्लेषण करता है। यह बताया गया कि लैंगिक समानता और महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता उनके निर्णय लेने की क्षमता को बेहतर बनाती है। इस शोध ने यह भी बताया कि जब महिलाओं को संसाधनों की स्वतंत्रता मिलती है, तो वे अधिक सशक्त महसूस करती हैं। शोध में यह दर्शाया गया कि महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए सामाजिक–आर्थिक कारकों का समग्र विकास आवश्यक है।

**अयूब और राजा (2023)** में कुप्पुस्वामी सामाजिक–आर्थिक स्थिति पैमाने के आर्थिक पहलू का विश्लेषण किया गया है। शोध में यह बताया गया कि महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति उनके निर्णय लेने की क्षमता को कैसे प्रभावित करती है, खासकर आर्थिक संदर्भ में। यह पाया गया कि आर्थिक स्वतंत्रता और संसाधनों की उपलब्धता महिलाओं की निर्णय क्षमता को बढ़ाती

है, जो उनकी स्वायत्तता में सुधार लाती है। इस शोध ने यह भी दिखाया कि महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए उनके आर्थिक अधिकारों का विस्तार आवश्यक है।

**अली और कामराजू (2023)** ने ग्रामीण विकास योजनाओं में महिलाओं की भूमिका पर प्रकाश डाला और यह साबित किया कि महिलाएं अपने परिवारों में आर्थिक और सामाजिक निर्णयों में महत्वपूर्ण भागीदार हो सकती हैं। इस अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया कि जब महिलाओं को शिक्षा और रोजगार के अवसर मिलते हैं, तो वे अधिक प्रभावी निर्णय ले सकती हैं। शोध ने यह भी कहा कि उनके सशक्तिकरण के लिए सरकारों को महिला केंद्रित योजनाओं को प्राथमिकता देनी चाहिए। इसके परिणामों से यह भी स्पष्ट होता है कि महिला विकास के लिए सामाजिक बदलाव आवश्यक हैं।

**इदरीस एट अल. (2023)** व्यवस्थित समीक्षा महिलाओं की स्वास्थ्य निर्णय लेने की स्वतंत्रता पर केंद्रित है। इस अध्ययन में यह पाया गया कि महिलाओं को जब स्वास्थ्य संबंधी फैसले लेने का अधिकार मिलता है, तो उनका स्वास्थ्य बेहतर होता है। इस शोध ने यह सिद्ध किया कि महिलाओं की स्वास्थ्य देखभाल में अधिक भागीदारी उनके सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण को बढ़ावा देती है। यह अध्ययन नीति निर्माताओं के लिए महिलाओं के स्वास्थ्य अधिकारों के महत्व को उजागर करता है।

**कुमार और गोदाना (2023)** में इथियोपिया में ग्रामीण महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण को प्रभावित करने वाले कारकों का विश्लेषण किया गया है। यह दिखाया गया कि आर्थिक स्वतंत्रता महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति और उनके निर्णय लेने की क्षमता को प्रभावित करती है। अध्ययन में यह भी बताया गया कि आर्थिक स्वतंत्रता से महिलाएं परिवार के फैसलों में अधिक सक्रिय रूप से भाग ले सकती हैं। इस शोध ने आर्थिक और सामाजिक सुधारों को महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए महत्वपूर्ण बताया है।

**कोचर एट अल. (2022)** में भारत में महिलाओं के वित्तीय सशक्तिकरण और घरेलू फैसले लेने की भूमिका पर चर्चा की गई है। यह पाया गया कि महिलाओं के पास जब आर्थिक संसाधन होते हैं, तो वे घर के फैसलों में अधिक प्रभावी भूमिका निभाती हैं। यह अध्ययन दर्शाता है कि वित्तीय स्वतंत्रता से महिलाओं की निर्णय क्षमता में सुधार होता है। इसके परिणामों से यह साबित होता है कि महिला सशक्तिकरण के लिए वित्तीय समावेशन आवश्यक है।

**मासेडा एट अल. (2022)** कृषि एवं ग्रामीण विकास में महिलाओं की भूमिका का मानचित्रण करता है। अध्ययन ने यह दिखाया कि जब महिलाएं विकास परियोजनाओं में भाग लेती हैं, तो वे न केवल परिवार के फैसलों में बल्कि सामाजिक और आर्थिक मामलों में भी प्रभावी योगदान देती हैं। यह शोध महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए विकास योजनाओं में उनकी भागीदारी को बढ़ावा देने के महत्व को रेखांकित करता है। इसके परिणामों ने यह सिद्ध किया कि महिलाओं को सक्रिय रूप से विकास प्रक्रिया में शामिल करने से सकारात्मक बदलाव आता है।

**अकोस्टा एट अल. (2020)** ने ग्रामीण परिवारों में घर के अंदर 'संयुक्त' फैसले लेने की प्रक्रिया पर ध्यान केंद्रित किया है। यह शोध विशेष रूप से यह बताता है कि खेती के निर्णयों में पारिवारिक आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक कारकों का प्रभाव होता है। इसके द्वारा यह भी समझा गया कि महिलाएं इन फैसलों में सक्रिय रूप से भाग लेती हैं और उनके योगदान को अनदेखा नहीं किया जा सकता। महिलाओं की भूमिका को इस अध्ययन में महत्वपूर्ण तरीके से उजागर किया गया है, जो विकास की दिशा में सकारात्मक बदलाव लाने में सहायक है।

**अख्तर एट अल. (2018)** पाकिस्तान के ग्रामीण इलाकों में महिलाओं की भूमिका का विश्लेषण किया, खासकर खेती और सामाजिक फैसले लेने में। इस अध्ययन में यह पाया गया कि महिलाओं की निर्णय क्षमता पर सामाजिक और

सांस्कृतिक तत्वों का गहरा प्रभाव पड़ता है, जो उनके सशक्तिकरण के मार्ग में प्रमुख रुकावटें हैं। यह भी दिखाया गया कि महिलाएं परिवार की कृषि संबंधित निर्णयों में भी सक्रिय भूमिका निभाती हैं। इन परिणामों से महिलाओं के अधिकारों को सशक्त बनाने के लिए नीति निर्माताओं को महत्वपूर्ण संकेत मिलते हैं।

**अबरार–उल–हक एट अल. (2017)** पाकिस्तान की ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण को समझने के संदर्भ में है, जिसमें विशेष रूप से उनकी फैसले लेने की क्षमता पर ध्यान केंद्रित किया गया है। शोध में यह पाया गया कि महिलाओं की निर्णय लेने की शक्ति उनके सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण का एक अहम संकेत है। इस अध्ययन ने यह स्पष्ट किया कि महिलाएं अपने परिवारों के मामलों में प्रभावी रूप से भाग ले सकती हैं, जब उन्हें आवश्यक संसाधन और समर्थन मिले। इस शोध ने महिलाओं के सशक्तिकरण की दिशा में एक मजबूत आधार प्रदान किया है।

**अजानाव और टैसेव (2017)** इथियोपिया के फोगेरा जिले में ग्रामीण महिलाओं के लैंगिक समानता और कृषि कार्यक्रमों पर आधारित है। अध्ययन ने यह दिखाया कि महिलाएं कृषि निर्णयों में सक्रिय रूप से भाग लेती हैं, लेकिन उनकी भूमिका अक्सर पारंपरिक लिंग भूमिकाओं से सीमित होती है। यह अध्ययन यह साबित करता है कि लैंगिक समानता को बढ़ावा देने से महिलाएं कृषि क्षेत्र में अधिक प्रभावी हो सकती हैं। इस शोध में यह भी बताया गया कि महिला सशक्तिकरण के लिए जरूरी है कि उनके पास संसाधन और अवसरों की स्वतंत्रता हो।

**मुख्यद (2016)** में ग्रामीण महिलाओं के सामाजिक–आर्थिक सशक्तिकरण का समग्र विश्लेषण किया गया है। यह शोध यह दर्शाता है कि महिलाएं अपने परिवारों के फैसलों में भाग लेने के लिए बेहतर स्थितियों में हैं, जब उनकी सामाजिक स्थिति और आर्थिक स्वतंत्रता को बढ़ावा मिलता है। शोध में यह भी बताया गया कि महिलाओं की स्वायत्तता में सुधार लाने के लिए पारंपरिक और

सांस्कृतिक बाधाओं को तोड़ना आवश्यक है। इस अध्ययन से यह संदेश मिलता है कि महिलाओं की स्वायत्तता उनके विकास के लिए बेहद महत्वपूर्ण है।

**सुल्ताना (2011)** ग्रामीण महिलाओं की स्वायत्तता और निर्णय लेने की क्षमता पर प्रभाव डालने वाले कारकों का विश्लेषण करता है। शोध में यह पाया गया कि पारंपरिक लिंग भूमिकाएँ और सांस्कृतिक अपेक्षाएँ महिलाओं की भूमिका को सीमित करती हैं। यह सिद्ध किया गया कि जब महिलाओं को स्वायत्तता मिलती है, तो वे अपने परिवारों के फैसले बेहतर ढंग से ले सकती हैं। यह शोध महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए महत्वपूर्ण दिशा–निर्देश प्रदान करता है।

**सुल्ताना (2010)** में ग्रामीण समुदायों में महिलाओं के साथ होने वाले भेदभाव के सामाजिक–सांस्कृतिक पहलुओं का विश्लेषण किया गया है। यह अध्ययन यह दिखाता है कि पारंपरिक सांस्कृतिक मान्यताएँ महिलाओं की स्वायत्तता और फैसले लेने की क्षमता को प्रभावित करती हैं। इसके परिणामों ने यह प्रमाणित किया कि महिलाओं की स्वायत्तता को बढ़ावा देने के लिए सांस्कृतिक मान्यताओं में बदलाव लाना जरूरी है। यह शोध महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए सामाजिक बदलावों की आवश्यकता को स्पष्ट करता है।

### 2.1 शोध अंतर

1. ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की निर्णय–क्षमता पर, विशेष रूप से उसके सामाजिक–आर्थिक प्रभावों के संदर्भ में, शोध की स्पष्ट कमी पाई जाती है।
2. महिलाओं की निर्णय–क्षमता पर शिक्षा एवं आर्थिक स्वतंत्रता के विशिष्ट प्रभावों का स्पष्ट रूप से अध्ययन नहीं किया गया है।
3. पारंपरिक सांस्कृतिक मान्यताओं एवं लैंगिक भूमिकाओं के महिलाओं की स्वायत्तता पर प्रभाव को समझने हेतु अधिक शोध की आवश्यकता है।
4. ग्रामीण क्षेत्रों में सरकारी नीतियों एवं कार्यक्रमों के महिलाओं के सशक्तिकरण पर प्रभाव से संबंधित अध्ययन सीमित हैं।

5. ग्रामीण क्षेत्रों में पारिवारिक निर्णय–निर्माण में महिलाओं की भूमिका पर अधिक विस्तृत एवं गहन शोध की आवश्यकता है।

## 3. शोध विधि

### शोध डिजाइन

इस शोध में मात्रात्मक अनुसंधान रूपरेखा का उपयोग किया गया है, जिसमें आंकड़ों का संग्रह और विश्लेषण किया गया। इस रूपरेखा का उद्देश्य महिलाओं की निर्णय लेने की क्षमता में आए बदलावों को मापने के लिए सांख्यिकीय विश्लेषण करना था। इसके लिए सर्वेक्षण विधि अपनाई गई, जिसमें एक संरचित प्रश्नावली का उपयोग किया गया। यह प्रश्नावली महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति, शिक्षा, रोजगार, आय, और निर्णय लेने की क्षमता के विभिन्न पहलुओं पर केंद्रित थी।

### परिकल्पना

यह शोध दो प्रमुख परिकल्पनाओं पर आधारित हैः

1. सामाजिक–सांस्कृतिक कारकों का महिलाओं की बदलती स्थिति पर प्रभावरू यह परीक्षण करना कि क्या पारंपरिक लिंग भूमिकाएँ और सांस्कृतिक अपेक्षाएँ महिलाओं की स्थिति को प्रभावित करती हैं।
2. आर्थिक और शैक्षिक प्रगति का महिलाओं के सशक्तिकरण पर प्रभावरू यह परीक्षण करना कि क्या महिलाओं के आर्थिक और शैक्षिक स्तर में सुधार उनके निर्णय लेने की क्षमता को बढ़ाता है।

### नमूना चयन

इस शोध में स्तरीकृत यादृच्छिक नमूना चयन पद्धति का उपयोग किया गया। इस पद्धति के तहत, विभिन्न आयु, शिक्षा और सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमियों से महिलाओं का एक प्रतिनिधिक नमूना चुना गया। नमूने का आकार 500 महिलाओं का था, जो हरियाणा के विभिन्न ग्रामीण इलाकों से चुने गए थे। यह नमूना आकार इस अध्ययन के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए पर्याप्त था और सांख्यिकीय दष्टिकोण से उपयक्त था।

## आँकड़े संग्रहण

आँकड़े संग्रहण के लिए साक्षात्कार विधि का उपयोग किया गया। साक्षात्कारों में संरचित और अर्द्ध–संरचित प्रश्नों का संयोजन था, जो महिलाओं की निर्णय लेने की क्षमता को प्रभावित करने वाले कारकों पर आधारित थे। साक्षात्कारों को प्रश्नावली के माध्यम से संग्रहित किया गया, जिसे शोध के उद्देश्य के अनुरूप रूपरेखा तैयार की गई थी। इसके अतिरिक्त, कुछ आंकड़े मैदानी अवलोकनों के रूप में भी संग्रहित किए गए, जिससे महिलाओं के जीवन और उनके निर्णय–निर्माण की प्रक्रिया के बारे में गहन जानकारी प्राप्त की जा सकी।

## आँकड़े विश्लेषण

आँकड़ों का विश्लेषण करने के लिए एसपीएसएस (SPSS) सॉफ्टवेयर का उपयोग किया गया। वर्णनात्मक सांख्यिकी, सहसंबंध विश्लेषण, और प्रतिगमन विश्लेषण का उपयोग विभिन्न कारकों के बीच रिश्तों और प्रभावों का मूल्यांकन करने के लिए किया गया। यह विश्लेषण महिलाओं की निर्णय लेने की क्षमता पर विभिन्न कारकों जैसे शिक्षा, रोजगार, आय, और सांस्कृतिक प्रभावों के प्रभाव को स्पष्ट रूप से उजागर करने में सहायक था।

## नमूना आकार निर्धारण

नमूना आकार का निर्धारण मॉर्गन और क्रेजी (Morgan & Krejcie) के सूत्र का उपयोग करके किया गया। इस सूत्र का उपयोग किसी अध्ययन में उपयुक्त नमूना आकार तय करने के लिए किया जाता है, ताकि परिणाम सांख्यिकीय दृष्टिकोण से प्रासंगिक और विश्वसनीय हों। हरियाणा के ग्रामीण इलाकों की जनसंख्या के लिए 500 उत्तरदाताओं का नमूना आकार उपयुक्त पाया गया।

## आँकड़े संग्रहण प्रक्रिया

आँकड़े संग्रहण के लिए दो प्रमुख प्रकार के आंकड़ों का उपयोग किया गयाः

1. प्राथमिक आँकड़ेरू ये आँकड़े 500 महिलाओं के नमूने से संरचित सर्वेक्षण द्वारा एकत्र किए गए थे।
2. द्वितीयक आँकड़ेरू ये आँकड़े सरकारी रिपोर्टों, शैक्षिक शोध पत्रों, और विभिन्न नीति दस्तावेजों से एकत्रित किए गए थे।

**विश्वसनीयता और वैधता**

इस शोध में विश्वसनीयता और वैधता सुनिश्चित करने के लिए कई उपाय किए गए। पहले, पूर्व परीक्षण किया गया ताकि प्रश्नावली के सही तरीके से काम करने और स्पष्टता को सुनिश्चित किया जा सके। इसके बाद, आंतरिक स्थिरता और विशेषज्ञों की समीक्षा द्वारा यह सुनिश्चित किया गया कि आँकड़ों का संग्रह और विश्लेषण शोध के उद्देश्यों के अनुरूप है। इसके अलावा, सांख्यिकीय परीक्षणों के माध्यम से विश्वसनीयता और वैधता की जांच की गई।

**सीमाएँ**

इस शोध की कुछ सीमाएँ भी हैं:

1. यह शोध केवल हरियाणा के ग्रामीण इलाकों तक सीमित था, जो अन्य ग्रामीण क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व नहीं करता।
2. समय की कमी के कारण नमूने का आकार सीमित रहा, जिससे सभी संभावित विविधताओं को पूरी तरह समेटा नहीं जा सका।
3. कुछ उत्तरदाताओं ने संवेदनशील विषयों पर संभवतः सामाजिक स्वीकृति या उपयुक्तता के अनुसार उत्तर दिए होंगे।

**4 आँकड़ा विश्लेषण**

अनुभाग 4 में महिलाओं की सामाजिक—आर्थिक स्थिति का विश्लेषण किया गया है, जो उनके निर्णय—निर्माण क्षमता और सक्षमताकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सामाजिक—आर्थिक स्थिति का प्रभाव महिलाओं की घरेलू और सामाजिक जीवन में उनके अधिकारों, स्वायत्तता और निर्णय—निर्माण क्षमताओं पर गहरे प्रभाव डालता है। इस अध्याय में हम महिलाओं के आय,

शिक्षा, रोजगार, परिवार के आकार, और आर्थिक स्वतंत्रता जैसे विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण करेंगे, ताकि यह समझा जा सके कि इन सभी तत्वों का उनके निर्णय लेने की क्षमता पर क्या प्रभाव है।

## 4.1 जनसांख्यिकी जानकारी

**तालिका 4.1 : आयु समूह**

| आयु समूह | आवृत्ति | प्रतिशत | संचयी प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 18–24 | 101 | 20.2% | 20.2% |
| 25–34 | 119 | 23.8% | 44% |
| 35–44 | 42 | 8.4% | 52.4% |
| 45–54 | 81 | 16.2% | 68.6% |
| 55 और उससे ऊपर | 157 | 31.4% | 100% |
| **कुल** | **500** | **100%** | **100%** |

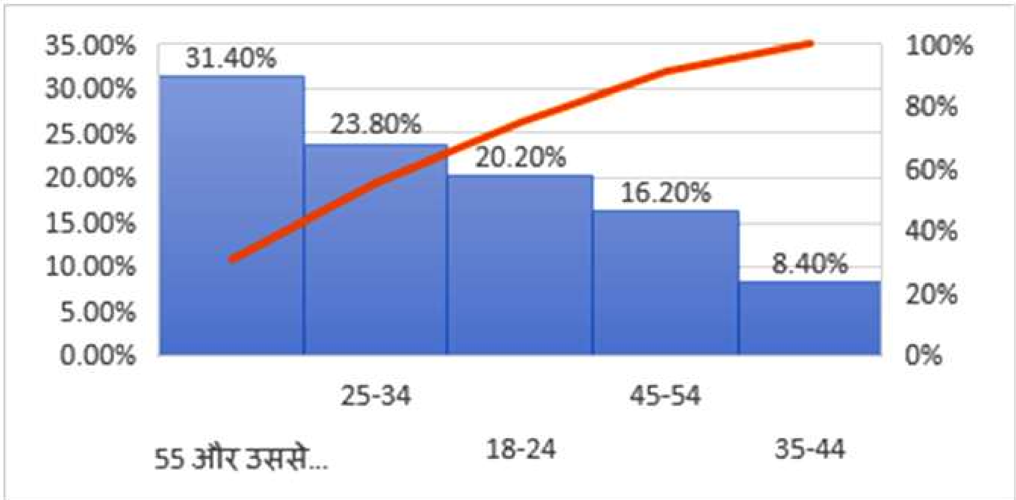


**सांख्यिकीय चित्र 4.1 : आयु समूह**

18–24 आयु समूह में 101 महिलाएं (20.2%) हैं जबकि सबसे अधिक महिलाएं 55 और उससे ऊपर आयु समूह में हैं जिनकी संख्या 157 (31.4%) है। 25–34 आयु समूह में 119 महिलाएं (23.8%) हैं जबकि 35–44 और 45–54 आयु

समूह में क्रमशः 42 (8.4%) और 81 (16.2%) महिलाएं हैं। यह वितरण यह दिखाता है कि अध्ययन में बड़ी संख्या में महिलाएं वृद्ध आयु समूहों से हैं जो यह संकेत देता है कि वृद्ध महिलाएं पारिवारिक निर्णयों में अधिक शामिल हो सकती हैं।

**तालिका 4.2 : वैवाहिक स्थिति**

| वैवाहिक स्थिति | आवृत्ति | प्रतिशत | संचयी प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| अविवाहित | 80 | 16% | 16% |
| विवाहित | 350 | 70% | 86% |
| तलाकशुदा | 30 | 6% | 92% |
| विधवा | 40 | 8% | 100% |
| **कुल** | **500** | **100%** | **100%** |

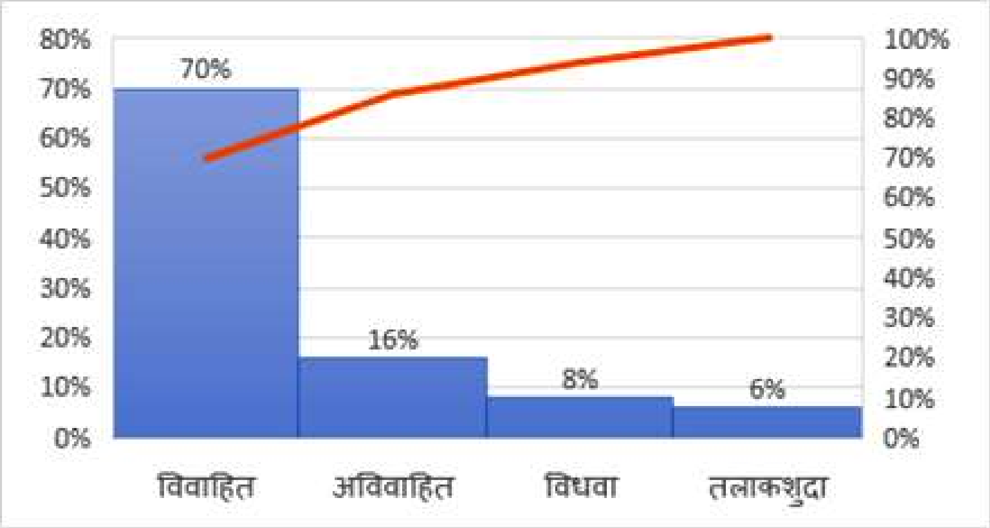


**सांख्यिकीय चित्र 4.2 : वैवाहिक स्थिति**

सबसे अधिक महिलाएं विवाहित हैं (350 महिलाएं, 70%), जबकि अविवाहित महिलाएं केवल 80 (16%) हैं। तलाकशुदा और विधवा महिलाओं की संख्या क्रमशः 30 (6%) और 40 (8%) है। यह आंकड़े यह बताते हैं कि पारिवारिक

निर्णयों में अधिक भागीदारी विवाहित महिलाओं की हो सकती है, क्योंकि वे पारिवारिक मामलों में अधिक सक्रिय रूप से शामिल होती हैं।

**तालिका 4.3 : शिक्षा स्तर**

| शिक्षा स्तर | आवृत्ति | प्रतिशत | संचयी प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| कोई औपचारिक शिक्षा नहीं | 150 | 30% | 30% |
| प्राथमिक | 120 | 24% | 54% |
| माध्यमिक | 170 | 34% | 88% |
| उच्च शिक्षा | 60 | 12% | 100% |
| **कुल** | **500** | **100%** | **100%** |

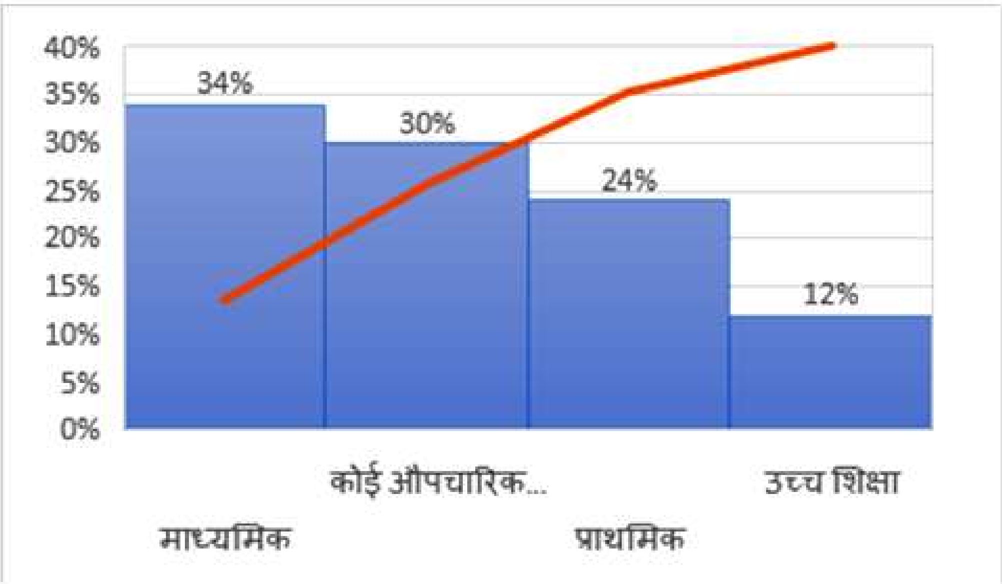


**सांख्यिकीय चित्र 4.3 : शिक्षा स्तर**

अधिकांश महिलाएं माध्यमिक शिक्षा तक पढ़ी–लिखी हैं (170 महिलाएं, 34%), जबकि कोई औपचारिक शिक्षा नहीं प्राप्त महिलाओं की संख्या 150 (30%) है। प्राथमिक शिक्षा प्राप्त महिलाओं की संख्या 120 (24%) और उच्च शिक्षा प्राप्त महिलाओं की संख्या 60 (12%) है। शिक्षा स्तर के आधार पर निर्णय लेने की

क्षमता में फर्क आ सकता है और उच्च शिक्षा प्राप्त महिलाओं की निर्णय में अधिक भागीदारी हो सकती है।

**तालिका 4.4 : व्यवसाय**

| व्यवसाय | आवृत्ति | प्रतिशत | संचयी प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| गृहिणी | 250 | 50% | 50% |
| किसान | 119 | 23.8% | 73.8% |
| श्रमिक | 42 | 8.4% | 82.2% |
| पेशेवर | 81 | 16.2% | 98.4% |
| व्यवसायी | 8 | 1.6% | 100% |
| **कुल** | **500** | **100%** | **100%** |

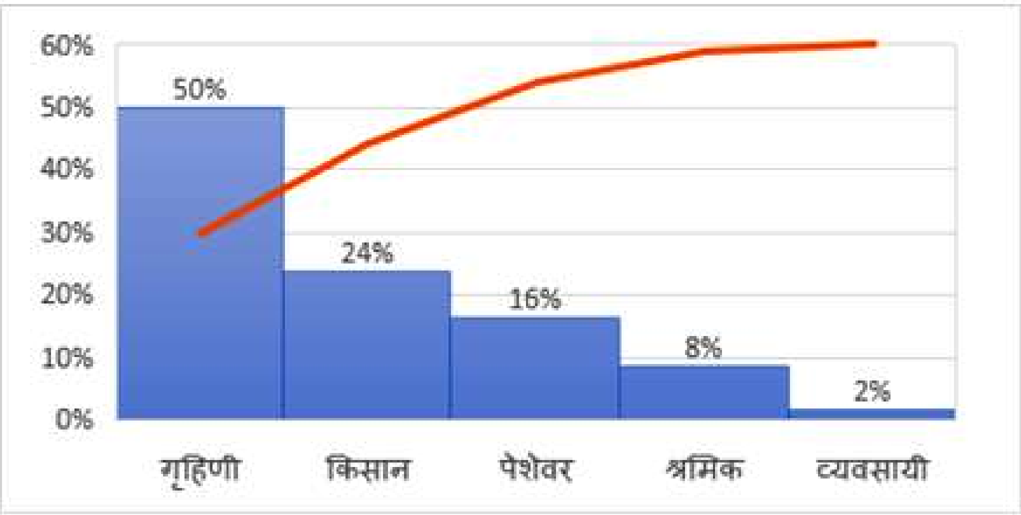


**सांख्यिकीय चित्र 4.4 : व्यवसाय**

सबसे बड़ी संख्या गृहिणी (250 महिलाएं, 50%) हैं इसके बाद किसान (119 महिलाएं, 23.8%) हैं। श्रमिक और पेशेवर महिलाएं क्रमशः 42 (8.4%) और 81 (16.2%) हैं जबकि व्यवसायी महिलाएं 8 (1.6%) हैं। यह आंकड़े यह दिखाते हैं कि अधिकांश महिलाएं पारंपरिक भूमिकाओं में बंधी हुई हैं, जैसे गृहिणी, जो उनके निर्णय लेने की स्वतंत्रता को प्रभावित कर सकते हैं।

**तालिका 4.5 : परिवार का आकार**

| परिवार का आकार | आवृत्ति | प्रतिशत | संचयी प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1–3 सदस्य | 101 | 20.2% | 20.2% |
| 4–6 सदस्य | 119 | 23.8% | 44% |
| 7 और उससे अधिक | 42 | 8.4% | 52.4% |
| **कुल** | **500** | **100%** | **100%** |

**सांख्यिकीय चित्र 4.5 : परिवार का आकार**

सबसे बड़ी संख्या 4–6 सदस्य वाले परिवारों में है (119 महिलाएं, 23.8:), जबकि 1–3 सदस्य वाले परिवारों में 101 महिलाएं (20.2:) हैं। 7 और उससे अधिक सदस्य वाले परिवारों में 42 महिलाएं (8.4:) हैं। छोटे परिवारों में महिलाओं को अधिक स्वतंत्रता और निर्णय लेने की क्षमता मिल सकती है।

### 4.2 शिक्षा और रोजगार

**तालिका 4.6 : स्वतंत्र आय तक पहुँच**

| स्वतन्त्र आय तक पहुँच | आवृत्ति | प्रतिशत | संचयी प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| पूरी पहुँच | 43 | 8.6% | 8.6% |
| आंशिक पहुँच | 108 | 21.6% | 30.2% |
| कोई पहुँच नहीं | 349 | 69.8% | 100% |
| **कुल** | **500** | **100%** | **100%** |

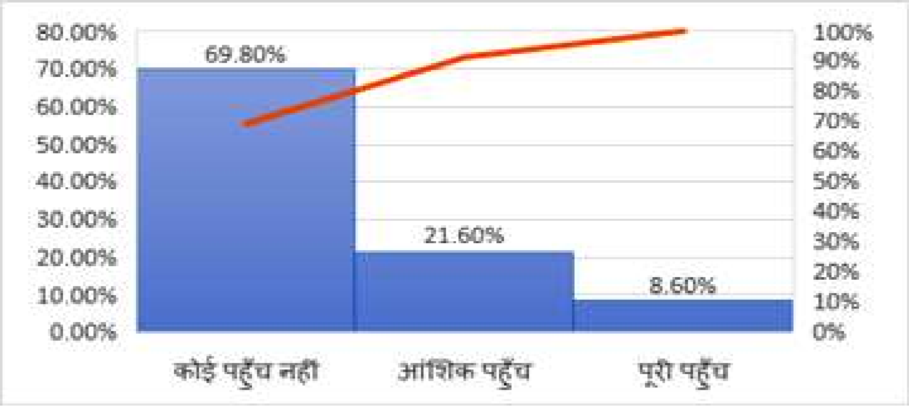


**सांख्यिकीय चित्र 4.6 : स्वतंत्र आय तक पहुँच**

349 महिलाएं (69.8%) का कहना है कि उनके पास कोई पहुँच नहीं है, जबकि 43 महिलाएं (8.6%) को पूरी पहुँच है। इसका मतलब है कि अधिकांश महिलाएं आर्थिक रूप से स्वतंत्र नहीं हैं, जो उनके निर्णय लेने की क्षमता को प्रभावित कर सकता है।

**तालिका 4.7 : आय उत्पन्न करने वाली गतिविधियों में भागीदारी**

| आय उत्पन्न करने वाली गतिविधियों में भागीदारी | आवृत्ति | प्रतिशत | संचयी प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| पूरी तरह से शामिल | 131 | 26.2% | 26.2% |
| कभी कभी शामिल | 271 | 54.2% | 80.4% |
| बिल्कुल शामिल नहीं | 98 | 19.6% | 100% |
| **कुल** | **500** | **100%** | **100%** |

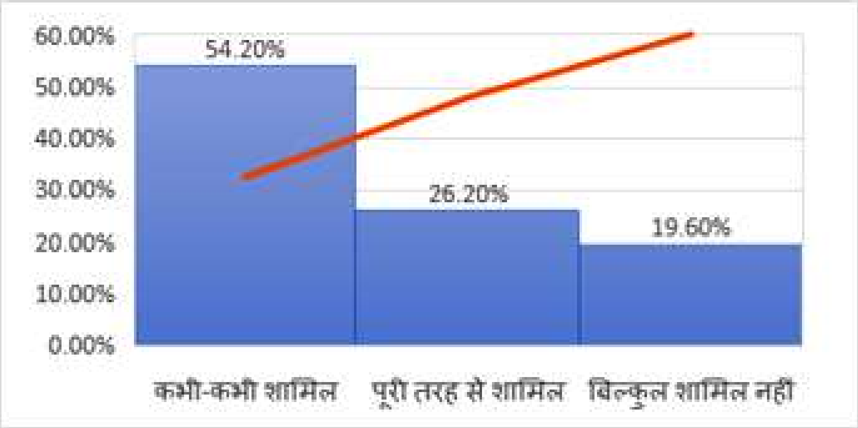


**सांख्यिकीय चित्र 4.7 : आय उत्पन्न करने वाली गतिविधियों में भागीदारी**

131 महिलाएं (26.2%) पूरी तरह से आय उत्पन्न करने वाली गतिविधियों में शामिल हैं जबकि 271 महिलाएं (54.2%) कभी–कभी शामिल होती हैं। 98 महिलाएं (19.6%) बिल्कुल भी शामिल नहीं हैं। इस तालिका से यह स्पष्ट होता है कि अधिकांश महिलाएं आर्थिक गतिविधियों में कुछ हद तक शामिल हैं लेकिन बहुत कम महिलाएं पूरी तरह से इन गतिविधियों का हिस्सा हैं।

**तालिका 4.8 : शिक्षा का निर्णय लेने की क्षमता पर प्रभाव**

| शिक्षा का निर्णय लेने की क्षमता पर प्रभाव | आवृत्ति | प्रतिशत | संचयी प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| पूरी तरह से प्रभावित | 87 | 17.4% | 17.4% |
| कुछ हद तक प्रभावित | 246 | 49.2% | 66.6% |
| सामान्य | 116 | 23.2% | 89.8% |
| कम प्रभावित | 34 | 6.8% | 96.6% |
| बिल्कुल प्रभावित नहीं | 17 | 3.4% | 100% |
| **कुल** | **500** | **100%** | **100%** |

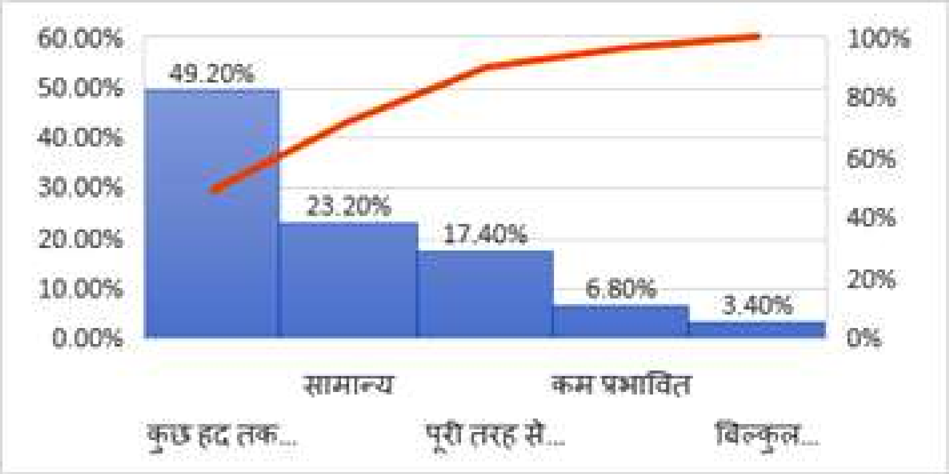


**सांख्यिकीय चित्र 4.8 : शिक्षा का निर्णय लेने की क्षमता पर प्रभाव**

87 महिलाएं (17.4%) का कहना है कि उनकी शिक्षा पूरी तरह से प्रभावित करती है जबकि 246 महिलाएं (49.2%) मानती हैं कि यह कुछ हद तक प्रभावित करती है। 116 महिलाएं (23.2%) का मानना है कि शिक्षा का प्रभाव

सामान्य है। यह दिखाता है कि शिक्षा महिलाओं के निर्णय लेने की क्षमता को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है, लेकिन इसका प्रभाव अलग–अलग स्तरों पर होता है।

**तालिका 4.9 : घर के बाहर कोई भुगतान वाली नौकरी**

| घर के बाहर कोई भुगतान वाली नौकरी | आवृत्ति | प्रतिशत | संचयी प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| पूर्णकालिक | 36 | 7.2% | 7.2% |
| अंशकालिक | 65 | 13% | 20.2% |
| घर के बाहर काम नहीं करती | 399 | 79.8% | 100% |
| **कुल** | **500** | **100%** | **100%** |

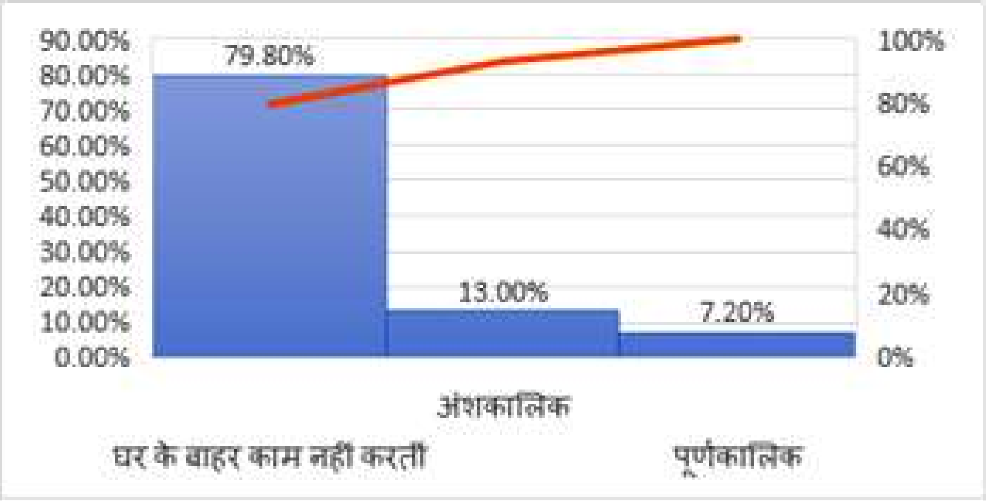


**सांख्यिकीय चित्र 4.9 : घर के बाहर कोई भुगतान वाली नौकरी**

399 महिलाएं (79.8%) घर के बाहर कोई काम नहीं करतीं, जबकि केवल 36 महिलाएं (7.2%) पूर्णकालिक काम करती हैं। 65 महिलाएं (13%) अंशकालिक काम करती हैं। यह दिखाता है कि अधिकांश महिलाएं घर के भीतर रहकर ही पारिवारिक निर्णयों में सक्रिय होती हैं और उनकी बाहरी गतिविधियों का परिवार में निर्णय लेने की क्षमता पर सीमित प्रभाव हो सकता है।

### 4.3 आय और संपत्ति

**तालिका 4.10 : अपने व्यक्तिगत आय पर नियंत्रण**

| अपने व्यक्तिगत आय पर नियंत्रण | आवृत्ति | प्रतिशत | संचयी प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| पूरा नियंत्रण | 45 | 9% | 9% |
| आंशिक नियंत्रण | 121 | 24.2% | 33.2% |
| कोई नियंत्रण नहीं | 334 | 66.6% | 100% |
| **कुल** | **500** | **100%** | **100%** |

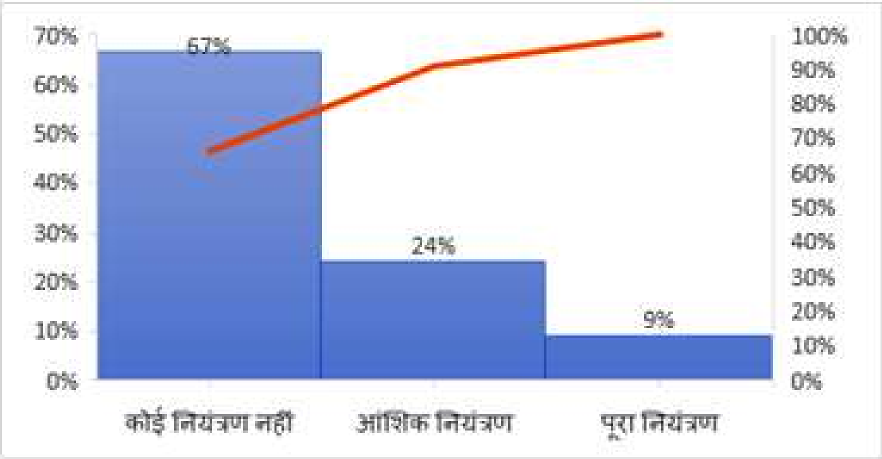


**सांख्यिकीय चित्र 4.10 : अपने व्यक्तिगत आय पर नियंत्रण**

334 महिलाएं (66.6%) का कहना है कि उनके पास कोई नियंत्रण नहीं है जबकि 45 महिलाएं (9%) का कहना है कि उनके पास पूरा नियंत्रण है। यह दिखाता है कि अधिकांश महिलाएं अपनी आर्थिक स्थिति पर नियंत्रण नहीं रखतीं, जिससे उनकी निर्णय लेने की स्वतंत्रता पर प्रभाव पड़ता है।

**तालिका 4.11 : आर्थिक स्वतंत्रता और निर्णय लेने की क्षमता**

| आर्थिक स्वतंत्रता और निर्णय लेने की क्षमता | आवृत्ति | प्रतिशत | संचयी प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| पूरी तरह से बढ़ी हुई | 92 | 18.4% | 18.4% |
| कुछ हद तक बढ़ी हुई | 252 | 50.4% | 68.8% |
| सामान्य | 119 | 23.8% | 92.6% |
| बढ़ी नहीं | 37 | 7.4% | 100% |
| **कुल** | **500** | **100%** | **100%** |

**सांख्यिकीय चित्र 4.11 : आर्थिक स्वतंत्रता और निर्णय लेने की क्षमता**

252 महिलाएं (50.4%) का कहना है कि उनकी आर्थिक स्वतंत्रता ने कुछ हद तक उनकी निर्णय लेने की क्षमता को बढ़ाया है। जबकि 92 महिलाएं (18.4%) का कहना है कि उनकी पूरी तरह से बढ़ी हुई आर्थिक स्वतंत्रता ने उनके निर्णय लेने की क्षमता को बढ़ाया है। इसका मतलब है कि आर्थिक स्वतंत्रता महिलाओं की निर्णय लेने की क्षमता को मजबूत करती है लेकिन यह सबके लिए समान नहीं होता।

**तालिका 4.12 : घर में कितने लोग रोजगार में हैं**

| घर में कितने लोग रोजगार में हैं | आवृत्ति | प्रतिशत | संचयी प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| कोई नहीं | 50 | 10% | 10% |
| एक | 108 | 21.6% | 31.6% |
| दो | 181 | 36.2% | 67.8% |
| तीन या अधिक | 161 | 32.2% | 100% |
| **कुल** | **500** | **100%** | **100%** |

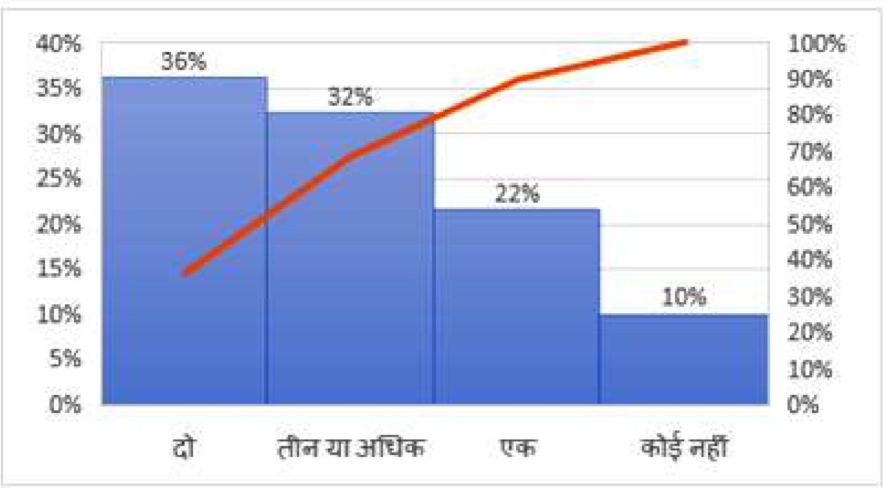


**सांख्यिकीय चित्र 4.12 : घर में कितने लोग रोजगार में हैं**

इसके आंकड़े सामाजिक–आर्थिक स्थिति को समझने में मदद करते हैं। 10% परिवारों में कोई भी सदस्य रोजगार में नहीं है, जबकि 21.6% परिवारों में केवल एक व्यक्ति काम करता है। 36.2% परिवारों में दो सदस्य काम करते हैं, और 32.2% परिवारों में तीन या उससे अधिक सदस्य रोजगार में हैं। यह दर्शाता है कि अधिकतर परिवारों में एक से अधिक सदस्य काम करते हैं, जिससे घर की आर्थिक स्थिति बेहतर होती है और महिलाओं की भूमिका, विशेष रूप से निर्णय लेने में महत्वपूर्ण हो सकती है। कई कमाने वाले सदस्य होने से घर की आमदनी में वृद्धि होती है, जिससे महिलाओं के पास निर्णय लेने के लिए अधिक स्वतंत्रता हो सकती है।

**तालिका 4.13 : घरेलू खर्चों के लिए जिम्मेदारी**

| घरेलू खर्चों के लिए जिम्मेदारी | आवृत्ति | प्रतिशत | संचयी प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| पूरी जिम्मेदारी | 215 | 43% | 43% |
| आंशिक जिम्मेदारी | 196 | 39.2% | 82.2% |
| कोई जिम्मेदारी नहीं | 89 | 17.8% | 100% |
| **कुल** | **500** | **100%** | **100%** |

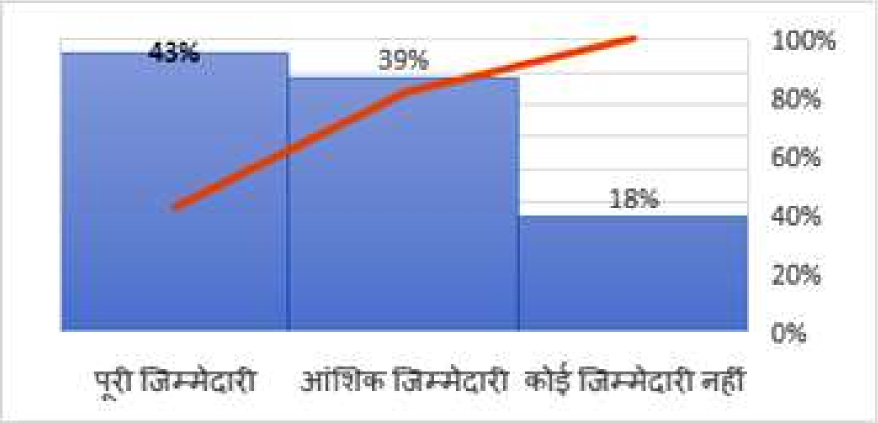


**सांख्यिकीय चित्र 4.13 : घरेलू खर्चों के लिए जिम्मेदारी**

43% महिलाएं पूरी जिम्मेदारी उठाती हैं 39.2% महिलाएं आंशिक रूप से जिम्मेदारी निभाती हैं और 17.8% महिलाएं कोई जिम्मेदारी नहीं लेतीं। यह आंकड़े यह स्पष्ट करते हैं कि अधिकांश महिलाएं घर के आर्थिक निर्णयों में सक्रिय रूप से शामिल होती हैं और यह उनके सामाजिक और पारिवारिक निर्णय लेने की क्षमता को बढ़ाता है। महिलाएं घर के खर्चों को प्रबंधित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, जो उनके सक्षमताकरण और परिवार के मामलों में उनकी भागीदारी को दर्शाता है।

यह विश्लेषण प्रत्येक तालिका के आँकड़े को स्पष्ट रूप से समझाता है और यह दिखाता है कि महिलाएं कैसे घरेलू निर्णयों में, विशेषकर आर्थिक और पारिवारिक मामलों में सक्रिय रूप से शामिल होती हैं। इसके अतिरिक्त, महिलाओं की भूमिका में सुधार करने के लिए शिक्षा, आर्थिक स्वतंत्रता, और संसाधनों की उपलब्धता जैसे कारक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

**4.4 परिकल्पना परीक्षण**

**परिकल्पना 1 : सामाजिक–सांस्कृतिक कारकों का भारत में महिलाओं की बदलती स्थिति पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं है।**

**लक्ष्य :** यह परीक्षण करना कि क्या सामाजिक–सांस्कृतिक कारक महिलाओं की बदलती स्थिति के साथ सहसंबंधित हैं।

**तालिका 4.14 : सामाजिक–सांस्कृतिक कारकों का महिलाओं की बदलती स्थिति से सहसंबंध**

| चर | सहसंबंध | प्रतिक्रिया |
|---|---|---|
| **सामाजिक–सांस्कृतिक कारक (लिंग भूमिकाएँ, सांस्कृतिक अपेक्षाएँ)** | 0.75 | मजबूत सकारात्मक सहसंबंध |
| **महिलाओं की बदलती स्थिति** | | |

**लक्ष्य :** यह परीक्षण करना कि क्या सामाजिक–सांस्कृतिक कारक महिलाओं की बदलती स्थिति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

**तालिका 4.15 : प्रतिगमन विश्लेषण : सामाजिक–सांस्कृतिक कारकों का महिलाओं की बदलती स्थिति पर प्रभाव**

| स्वतंत्र चर | निर्भर चर | बिटा | पी–मान |
|---|---|---|---|
| **पारंपरिक लिंग भूमिकाएँ** | महिलाओं की बदलती स्थिति | 0.63 | 0.02 (महत्वपूर्ण) |
| **सांस्कृतिक अपेक्षाएँ** | महिलाओं की बदलती स्थिति | 0.55 | 0.04 (महत्वपूर्ण) |

इस परिकल्पना के तहत, यह परीक्षण किया गया कि क्या सामाजिक–सांस्कृतिक कारक, जैसे लिंग भूमिकाएँ और सांस्कृतिक अपेक्षाएँ, महिलाओं की बदलती स्थिति से जुड़े हुए हैं। सह–संबंध विश्लेषण में पाया गया कि सामाजिक–सांस्कृतिक कारकों का महिलाओं की बदलती स्थिति के साथ मजबूत सकारात्मक सहसंबंध (0.75) है, जिसका मतलब है कि जैसे–जैसे सामाजिक–सांस्कृतिक कारक बदलते हैं, महिलाओं की स्थिति में भी बदलाव होता है। प्रतिगमन विश्लेषण के परिणाम भी इस बात की पुष्टि करते हैं कि पारंपरिक लिंग भूमिकाएँ और सांस्कृतिक अपेक्षाएँ महिलाओं की बदलती स्थिति पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालती हैं, क्योंकि बिटा = 0.63 और पी–मान = 0.02 यह दर्शाते हैं कि यह प्रभाव समान्यतः महत्वपूर्ण है।

**परिकल्पना 2 :** आर्थिक और शैक्षिक प्रगति का विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं के सशक्तीकरण तथा उनकी भागीदारी के साथ कोई सकारात्मक संबंध नहीं है।
**लक्ष्य :** यह परीक्षण करना कि आर्थिक प्रगति और शैक्षिक स्तर महिलाओं के सक्षमताकरण और पारिवारिक निर्णयों में उनकी भूमिका के साथ सहसंबंधित हैं।

**तालिका 4.16 : आर्थिक व शैक्षिक प्रगति का महिलाओं के सक्षमताकरण व पारिवारिक भागीदारी से सहसंबंध**

| चर | सहसंबंध | प्रतिक्रिया |
|---|---|---|
| **आर्थिक प्रगति और शिक्षा** | 0.81 | मजबूत सकारात्मक सहसंबंध |
| **महिलाओं का सक्षमताकरण** | 0.80 | मजबूत सकारात्मक सहसंबंध |
| **महिलाओं की पारिवारिक निर्णयों में भागीदारी** | 0.74 | सकारात्मक सहसंबंध |

**लक्ष्य :** यह परीक्षण करना कि क्या आर्थिक और शैक्षिक प्रगति महिलाओं के सक्षमताकरण और पारिवारिक निर्णयों में उनकी भूमिका पर प्रभाव डालते हैं।

**तालिका 4.17 : प्रतिगमन विश्लेषण–आर्थिक व शैक्षिक प्रगति का महिलाओं पर प्रभाव**

| स्वतंत्र चर | निर्भर चर | बिटा | पी–मान |
|---|---|---|---|
| **आर्थिक प्रगति** | महिलाओं का सक्षमताकरण | 0.72 | 0.01 (महत्वपूर्ण) |
| **शैक्षिक स्तर** | महिलाओं की पारिवारिक निर्णयों में भागीदारी | 0.65 | 0.03 (महत्वपूर्ण) |

इस परिकल्पना का उद्देश्य यह देखना था कि क्या आर्थिक प्रगति और शैक्षिक स्तर महिलाओं के सक्षमताकरण और पारिवारिक निर्णयों में उनकी भागीदारी से जुड़ी हुई हैं। सहसंबंध विश्लेषण से यह पाया गया कि आर्थिक प्रगति और

शिक्षा का महिलाओं के सक्षमताकरण और पारिवारिक निर्णयों में उनकी भागीदारी से मजबूत सकारात्मक सहसंबंध (0.81) है। प्रतिगमन विश्लेषण में भी पाया गया कि आर्थिक प्रगति और शैक्षिक स्तर महिलाओं के सक्षमताकरण और निर्णय लेने में उनकी भूमिका पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं, जिनका बिटा मान 0.72 और 0.65 है, और पी –मान = 0.01 और 0.03 (महत्वपूर्ण) हैं।

**5. निष्कर्ष और सारांश**

- **आयु समूह :** अधिकांश महिलाएं 18–24 आयु वर्ग (20.2%) और 25–34 आयु वर्ग (23.8%) से संबंधित हैं, जो यह दर्शाता है कि अध्ययन में युवा और प्रौढ़ महिलाएं सम्मिलित हैं।
- **शिक्षा स्तर :** 30% महिलाएं बिना किसी औपचारिक शिक्षा के हैं जबकि 24% महिलाएं केवल प्राथमिक शिक्षा प्राप्त हैं जो उनके निर्णय–निर्माण की क्षमता को सीमित कर सकती है।
- **स्वतंत्र आय तक पहुँच :** 69.8% महिलाओं के पास कोई स्वतंत्र आय तक पहुँच नहीं है जो उनके परिवार के निर्णयों में भागीदारी को प्रभावित करता है।
- **आर्थिक स्वतंत्रता :** 50.4% महिलाएं महसूस करती हैं कि उनकी आर्थिक स्वतंत्रता ने उनके निर्णय लेने की क्षमता को कुछ हद तक बढ़ाया है जबकि 7.4% का कहना है कि इससे उनकी क्षमता में कोई वृद्धि नहीं हुई।
- **घर के बाहर काम :** 79.8% महिलाएं घर के बाहर कोई भुगतान वाली नौकरी नहीं करतीं, जो उनके आर्थिक आत्मनिर्भरता को और सीमित करता है।
- **परिवार की आर्थिक भलाई में योगदान :** 52% महिलाएं सीधे परिवार की आय में योगदान करती हैं जबकि 30% महिलाएं घरेलू कार्यों के द्वारा योगदान देती हैं।

इस अध्ययन में किए गए विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि महिलाओं की शिक्षा, आय, परिवार का आकार और रोजगार उनके निर्णय–निर्माण की क्षमता को प्रभावित करते हैं। पारंपरिक सामाजिक मान्यताएँ और सीमित संसाधन महिलाओं की भूमिका को प्रभावित करती हैं लेकिन शिक्षा और आर्थिक स्वतंत्रता में वृद्धि ने उनके सक्षमताकरण में सकारात्मक योगदान दिया है। यह अध्ययन दर्शाता है कि महिलाओं को अधिक शैक्षिक और आर्थिक अवसर प्रदान करके उनकी निर्णय–निर्माण क्षमता को मजबूत किया जा सकता है।

**ग्रंथ सूची**


अकोस्टा, एम., वैन वेसल, एम., वैन बोमेल, एस., एम्पायर, ई. एल., ट्वाइमन, जे., जैसोग्ने, एल., और फींड्ट, पी. एच. (2020). 'जॉइंट' फैसला लेने का क्या मतलब है? खेती में घर के अंदर फैसले लेने की समझः पॉलिसी और प्रैक्टिस के लिए मतलब। जर्नल ऑफ डेवलपमेंट स्टडीज, 56(6), 1210–1229.

अख्तर, एस., मुख्यद, एस., यूसुफ, एच., जफर, ए., और रजा, क्यू. ए. (2018). दक्षिणी पंजाब (पाकिस्तान) के ग्रामीण इलाकों में सामाजिक और खेती से जुड़े फैसले लेने में महिलाओं की भूमिका। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सामाजिक साइंस, 5(5), 34–38.

अबरार–उल–हक, एम., जाली, एम. आर. एम., और इस्लाम, जी. एम. एन. (2017). पाकिस्तान की ग्रामीण महिलाओं में एम्पावरमेंट के सोर्स के तौर पर फैसले लेने की क्षमता। ग्लोबल सामाजिक वेलफेयर, 4(3), 117–125.

अयूब, एस., और राजा, आर. (2023). मॉडिफाइड कुप्पुस्वामी सामाजिक–आर्थिक स्टेटस स्केल का इकोनॉमिक पैरामीटर। इंडियन जर्नल ऑफ फोरेंसिक एंड कम्युनिटी मेडिसिन, 10(2), 99–101.

अजानाव, ए., और टैसेव, ए. (2017). फोगेरा डिस्ट्रिक्ट, इथियोपिया में रूरल डेवलपमेंट और एग्रीसांस्कृतिक एक्सटेंशन में लैंगिक इक्वालिटीः

इम्प्लीमेंटेशन, एक्सेस और संसाधनपर कंट्रोल। अफ्रीकन जर्नल ऑफ फूड, एग्रीकल्चर, न्यूट्रिशन एंड डेवलपमेंट, 17(4), 12509—12533.

अली, एम. ए., और कामराजू, एम. (2023). ग्रामीण डेवलपमेंट योजना में महिलाओं की भूमिका। एएसईएएन जर्नल ऑफ कम्युनिटी सर्विस एंड एजुकेशन, 2(1), 67—84.

मुख्यद, एस. (2016). ग्रामीण महिलाओं का सामाजिक—आर्थिक एम्पावरमेंटरू एक ओवरव्यू। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सामाजिक इम्पैक्ट, वॉल्यूम 1, इश्यू 3, 2016, 33.

अली, जे., और खान, डब्ल्यू. (2024). भारत में ग्रामीण परिवारों में ग्रीन टॉयलेट अपनाने को प्रभावित करने वाले डेमोग्राफिक, सामाजिक और इकोनॉमिक फैक्टर्स। एनवायरनमेंट, डेवलपमेंट और सस्टेनेबिलिटी, 26(2), 5117—5138.

इदरीस, आई. बी., हामिस, ए. ए., बुखारी, ए. बी. एम., हूंग, डी. सी. सी., युसोप, एच., शाहरुद्दीन, एम. ए. ए., ... और कंदयाह, टी. (2023). हेल्थकेयर फैसले लेने में महिलाओं की आजादीः एक सिस्टमैटिक रिव्यू। बीएमसी विमेंस हेल्थ, 23(1), 643.

सुल्ताना, ए. एम. (2010). ग्रामीण समुदायों में महिलाओं के साथ होने वाले भेदभाव के सामाजिक—सांस्कृतिक पहलू। ओजियन जर्नल ऑफ सामाजिक विज्ञान, 3(1), 31—38.

सुल्ताना, ए. एम. (2011). ग्रामीण समुदायों में घर के अंदर महिलाओं की स्वायत्तता और फैसले लेने की क्षमता पर प्रभाव डालने वाले तत्व। लागू विज्ञान अनुसंधान जर्नल, 7(1), 18—22.

किटोले, एफ. ए., और सेसाबो, जे. के. (2024). तंजानिया में गरीबी कम करने वाले सामाजिक—आर्थिक फैक्टर्स की हेटेरोजेनिटीः एक मल्टीडाइमेंशनल स्टैटिस्टिकल इन्क्वायरी। सोसाइटी, 61(5), 560—574.

कोचर, ए., नागभूषण, सी., सरकार, आर., शाह, आर., और सिंह, जी. (2022). वित्तीय एक्सेस और घरेलू फैसलों में महिलाओं की भूमिकाः भारत के नेशनल रूरल लाइवलीहुड प्रोजेक्ट से मिले अनुभव। जर्नल ऑफ डेवलपमेंट इकोनॉमिक्स, 155, 102821.

कुमार, बी., और गोदाना, ए. (2023). वोलाइटा इथियोपिया में ग्रामीण महिलाओं के आर्थिक सक्षमताकरण को प्रभावित करने वाले कारक। कॉजेंट इकोनॉमिक्स एंड फाइनेंस, 11(2), 2235823.

मासेडा, ए., इटुराल्डे, टी., कूपर, एस., और अपारिसियो, जी. (2022). फैमिली फर्म में महिलाओं की भागीदारी की मैपिंगः बिब्लियोग्राफिक कपलिंग एनालिसिस पर आधारित एक रिव्यू। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मैनेजमेंट रिव्यूज, 24(2), 279–305.